‘आइडीएस का सर्वे’ नामक इसके अध्याय नगर और कामगार के रिश्ते के अलावा साइकिल के बारे में ढेर सारी अन्य-अन्य सूचनाएं और रोचक प्रसंग प्रस्तुत करते हैं।

इन दिनों साइकिल और कामगार दोनों गहरे संकट का सामना कर रहे हैं। कामगारों की रोजी-रोटी की अनिश्चितता दिनानुदिन बढ़ रही है। उनके आवास उनसे छीन रहे हैं। उनके स्वास्थ्य और उनके बाल-बच्चों की शिक्षा अधर में लटकी हुई है। दूसरी तरफ, सड़क पर साइकिल से सफर करना अपनी जान हथेली पर लेकर निकलना है। बढ़ते तेज रफ्तार मोटर वाहनों के बीच साइकिलें सहमी-सहमी चलने के लिए मजबूर हैं। मोटर-वाहनों द्वारा छोड़ी जा रही प्रदूषित हवा साइकिल चालक के फेफड़ों में भरकर उसे अस्वस्थ बना रही है। इन सारी मुश्किलों के बीच नगर में साइकिलों के लिए एक लोकतांत्रिक जगह उपलब्ध कराई जा सकती है, यदि सरकार पूरे नगर में बड़े पैमाने पर बीआरटी कॉरिडोर का निर्माण कराए – इस बात का संकेत भी इस पुस्तक में है।

आदर्शवाद के आयाम
शहरी परिवहन से शहर तक के चिंतन का सफर

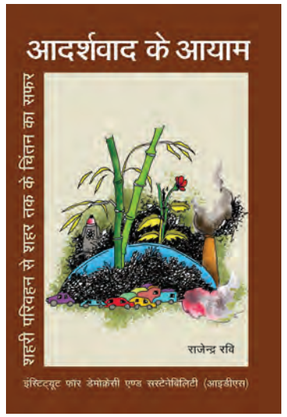

यथार्थ की धरती और सपना के बाद राजेन्द्र रवि की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह है। पहली पुस्तक 2007 में छपकर आई थी और काफी चर्चित हुई – इसलिए नहीं कि इसमें विद्वतापूर्ण रचनाएं थीं, बल्कि इसलिए कि इसमें शहर, परिवहन और अन्य विषयों पर लिखी गई रचनाओं में एक अलग दृष्टि थी, जो हमारी पृथ्वी और हमारे समाज को टिकाऊ बनाने के लिए हमें भिन्न ढंग से सोचने को प्रेरित करती है। इस पुस्तक की भूमिका में राजेन्द्र रवि ने लिखा है, “शहरी परिवहन के मुद्दे पर काम करते हुए मैंने हमेशा महसूस किया है कि यह मुद्दा शहर के परिवहन और यातायात तक सीमित नहीं है, इसका फलक बहुत विस्तृत है। अपनी जटिल संरचना में यह मुद्दा शहर में रहने वाले या यहां आने-जाने वाले हर व्यक्ति की समस्या के किसी न किसी पहलू से जुड़ा है।”

इस पुस्तक में गांव और शहर को एकदम पृथक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ा बताया गया है। लेखक की दृष्टि में, शहर विकास के क्रम में एक पड़ाव है, अंत नहीं। लेखक इस बात पर जोर देता है कि हमें यदि आत्मनिर्भर व गुणवत्तापूर्ण शहर का निर्माण करना है तो अपने संसाधनों और गैर-मोटर वाहनों को केंद्र में रखना होगा। हम अपनी दृष्टि के विस्तार के लिए दुनिया के तमाम अनुभवों से लाभ उठा सकते हैं, लेकिन तथाकथित विकास के लिए भिन्न वातावरण, जनसंख्या और भूगोल वाले विकसित देशों की नकल का रास्ता हमारे लिए खतरों से भरा है और अंततः हमारे लिए घातक है।

इसीलिए इस पुस्तक में शामिल रचनाएं विकास की प्रचलित अवधारणा पर सवाल खड़ा करती हैं, और शहर और विकास के मुद्दे पर नई बहस की मांग करती हैं। यह पुस्तक यद्यपि क्रमवार रूप से एक-एक विषय पर विचार करते हुए नहीं लिखी गई है, लेकिन इसकी सभी रचनाएं विचार के एक क्रम को दर्शाती हैं, जो शहर के बारे में एक नए चिंतन से उपजा है। शहर, पैदलयात्रा, साइकिल, साइकिल रिक्शा, कृषि, तकनीक, बीआरटी, मेट्रो रेल, समाज, विकास इत्यादि के बारे में घिसे-पिटे ढंग से सोचने से काम नहीं चलने वाला – यह पुस्तक भिन्न ढंग से सोचने के लिए उकसाती है, उत्साहित करती है और कुछ नई स्थापनाएं रखती है।

शहरी जन-परिवहन
विकल्पहीन साधनों के समक्ष चुनौतियां

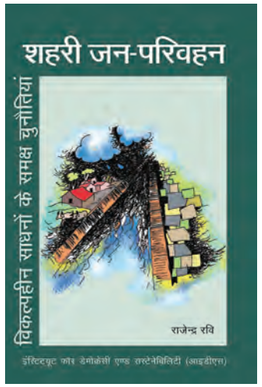

इस पुस्तक में जन-परिवहन के विभिन्न साधनों से संबंधित रचनाएं हैं, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गईं। ये रचनाएं लेख, टिप्पणी, रपट, साक्षात्कार, यात्रा-संस्मरण, कविता, इत्यादि, विविध विधाओं के रूप में हैं। इनके लेखक आम सामाजिक कार्यकर्ता या आम नागरिक हैं जिनके पास लेखन का कोई पारंपरिक अनुभव तो नहीं है, लेकिन अनुभव का ऐसा खजाना है जिसे लिखे बिना वे रह ही नहीं सकते थे। कुछ ने तो पहली बार ही कलम उठाई है और कुछ रच डाला है; क्योंकि इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं था उनके पास।

शहरी जन-परिवहन : विकल्पहीन साधनों के समक्ष चुनौतियां पुस्तक में पैदलयात्रा, साइकिल, साइकिल रिक्शा, रिक्शा ट्रॉली, ऊंटगाड़ी, भैंसागाड़ी, बैलगाड़ी, तांगा, इत्यादि के विविध पक्षों पर विचार किया गया है और शहर की परिवहन-व्यवस्था में इनके महत्व को उजागर करने के लिए इन पर लगने वाले आरोपों का जवाब दिया गया है। यहां न केवल देश के शहरों के यातायात-प्रबंधन, सड़क-जाम, शहरी प्रदूषण जैसी समस्याओं के संदर्भ में उपर्युक्त वाहनों की भूमिका पर गौर किया गया है, बल्कि देश में बेरोजगारी दूर करने, परिवहन के मामले में आत्मनिर्भर होने, ईंधन बचत करने और सड़क-दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने के मामले में भी शहरों में इनकी अधिकाधिक उपस्थिति की महत्ता को स्वीकार करते हुए नए प्रकार के सड़क ढांचा की जरूरत को रेखांकित किया गया है।

वाहन परिवहन के साधन ही नहीं होते, वे गरीब और आम आदमी के जीवन को कई-कई कोणों से प्रभावित करने वाले साधन होते हैं। ये लोग इनके चालक हों या सवारी, या ग्राहक, इन वाहनों को समाज में सम्मान से ही हमारे शहर और गांव सुखी और समृद्ध हो सकते हैं – इस संग्रह में शामिल रचनाएं इस बात का गहरा एहसास कराती हैं। यह संग्रह ऑटोरिक्शा चालकों के जीवन तथा अन्य कुछ वाहनों व उसके चालकों के बारे में भी कुछ कहता है।

बालिका शिक्षा : परिवहन और ज्ञान
झारखंड में परिवर्तन का औजार बनीं साइकिलें

हमारे देश में स्त्रियां शिक्षा के मामले में अब भी पिछड़ी हुई हैं। इसकी एक बड़ी वजह है उनके आवास से शिक्षण-संस्थानों की ज्यादा दूरी। समृद्ध परिवार के लोग अपनी बच्चियों को मंहगे शिक्षण-संस्थानों में पढ़ाते हैं और उनके लिए आने-जाने की समुचित व्यवस्था करते हैं, क्योंकि उनके पास पैसे की कमी नहीं होती। गरीब परिवार के लोग भोजन, वस्त्र और आवास जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए ही मुश्किल से पैसे का बंदोबस्त कर पाते हैं, ऐसी दशा में वे सस्ते या मुफ्त शिक्षा वाले सरकारी विद्यालयों में भी अपने बच्चों को नियमित तौर पर आने-जाने के साधन उपलब्ध नहीं करा पाते हैं। परिणामतः बच्चियों की शिक्षा रुक जाती है।

बालिका शिक्षा : परिवहन और ज्ञान – झारखंड में परिवर्तन का औजार बनीं साइकिलें पुस्तक एक अध्ययन से प्राप्त तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित है। इसमें झारखंड सरकार द्वारा विद्यालय जाने वाली बालिकाओं के बीच बांटी गई साइकिलों से उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव और बदलाव को लिपिबद्ध किया गया है। गरीब बालिकाओं की शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने के लिए हमारे देश की कई राज्य सरकारों ने बालिकाओं के बीच साइकिलों का वितरण किया है; मगर इस साइकिल-वितरण की जमीनी हकीकत क्या है – इस बारे में अभी तक कोई अध्ययन सामने नहीं आया है। इस मायने में यह पुस्तक अपनी तरह की अकेली है। इसमें झारखंड के सिमडेगा और हजारीबाग दो जिलों की जांच-पड़ताल मौजूद है।

विद्यालय जाने वाली बालिकाओं को साइकिलें ही उपलब्ध कराई गईं और कोई वाहन नहीं – इसके कई कारण हैं। साइकिल एक गैर-मोटरवाहन है। यह कम कीमत में उपलब्ध हो जाती है। यह किसी ईंधन से नहीं, बल्कि हाथ-पैर की शक्ति से चलती है। इसे चलाना भी आसान है और इसके रख-रखाव व मरम्मत पर आने वाला खर्च भी मामूली है। यह प्रदूषण भी पैदा नहीं करती। इतनी सारी खूबियों की वजह से यह उचित ही है कि राज्य सरकारों ने विद्यालय आने-जाने के लिए बालिकाओं को साइकिलें ही उपलब्ध कराईं। अपनी साइकिल होने से इन बालिकाओं के जीवन में कई तरह के सकारात्मक परिवर्तन दिखे; जिसका लाभ उन्हें खुद तो मिला ही, उनके परिवार, समाज और देश को भी फायदा हुआ। मगर साइकिलों को भरपूर सम्मान तभी मिल सकता है जब उनके अनुकूल सड़कें हों और समाज का मानस लोकतांत्रिक सोच-विचार वाला हो। यह पुस्तक साइकिल और ज्ञान के अन्य कई पहलुओं और प्रभावों की ओर भी ध्यान आकृष्ट करती है।

इंस्टिट्यूट फॉर डेमोक्रेसी एण्ड सस्टेनेबिलिटी (आइडीएस)
मकान नं.-7, गली नं.-1, ब्लॉक-ए, हिमगिरि इनक्लेव, पेप्सी रोड
मेन बुराड़ी रोड, नई दिल्ली-110084 • मोबाइलः +91-9868200316
ई-मेलः idsinitiative@gmail.com • rajendraravi1857@gmail.com

हाशिये से जवाब

परिवहन, समाज और लोकतंत्र की वैश्विक चुनौतियां

शहर, सड़कें और समाज

इंदौर की सड़कों पर लोकतंत्र का स्वप्न

इंदौर शहर इन दिनों थोड़ी मुश्किल में है। इस स्थिति के लिए जो चीजें जिम्मेदार हैं उनमें से एक है इसकी परिवहन-व्यवस्था। पहले लोग पैदल, साइकिल और तांगों में चलकर प्रदूषण-रहित वातावरण में खुशहाल थे। इंदौरवासी प्रसिद्ध हिंदी कवि कृष्णकांत निलोसे का कहना है, "1957 में यानि आधी सदी पहले, जब नागपुर से आकर मैंने इंदौर में अपना घर बसाया, तो लगा सचमुच मैं ऐसे नगर में आ बसा हूं, जिसकी फिजा में आत्मा को आनंद से सराबोर करने की अद्भुत शक्ति सतत प्रवाहित हो रही है। उन दिनों इंदौर एक खूबसूरत शहर था। इसकी सड़कें थीं आदमियों के लिए, एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए। इस शहर के लिए हादसे अजूबा थे। तब इस शहर को मालवा की अमरावती या स्वर्ग माना जाता था।" वही इंदौर इन दिनों सड़क-जाम, वायु व जल-प्रदूषण, सड़क-दुर्घटना आदि-आदि समस्याओं की भयंकर गिरफ्त में है। इसका मुख्य कारण है शहर में मोटर-वाहनों की संख्या का बेलगाम बढ़ना और इसके चालकों की अनुशासन-हीनता, अराजकता और दादागीरी, मानो इंदौर की सारी सड़कें सिर्फ उनके लिए हैं – गैर-मोटरवाहनों का इन पर कोई अधिकार नहीं है।

शहर, सड़कें और समाज : इंदौर की सड़कों पर लोकतंत्र का स्वप्न पुस्तक के अंतर्गत विभिन्न शीर्षकों के तहत इंदौर के संपूर्ण परिवहन-परिदृश्य पर एक नजर डाली गई है। इसमें इंदौर के पैदलयात्री, साइकिल, तांगा, बैलगाड़ी, हाथठेला, कार इत्यादि की स्थिति के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। कारों और मोटरगाड़ियों की बढ़ती तादाद की वजह से इंदौर की बहुसंख्यक जनता सड़कों पर अपने लोकतांत्रिक अधिकारों से वंचित होने को मजबूर है। इंदौर की जनता 'कार-मुक्त शहर की चाहत' रखती है, क्योंकि सड़क पर जाम, आफत में जान का सबब बना हुआ है। इंदौर के जन-प्रतिनिधि भी शहरी परिवहन के इस गंभीर मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं, मीडिया तो विज्ञापन से कमाई के फेर में मोटर-वाहनों का पैरोकार बनी हुई है। जहां तक वहां के सामाजिक संगठनों का सवाल है, वे अपने-अपने मुद्दों को लेकर व्यस्त हैं।

इसके बावजूद, जन-प्रतिनिधि हों, मीडिया हो, या सामाजिक संगठन–इनके बीच कुछ जनोन्मुखी आवाजें हैं जो यदा-कदा शहरी परिवहन में पैदलयात्री, साइकिल और अन्य गैर-मोटर वाहनों की तरफदारी करती रहती हैं। हमारी यह पुस्तक परिवहन के संदर्भ में इंदौर के द्वंद्व को संपूर्णता में प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयत्न है। अपनी सीमाओं के बावजूद यह किताब इंदौर के परिवहन के बहाने एक ऐसे संवाद की शुरूआत करती है जो भारत के सभी शहरों के लिए मौजू है। और, यह इस बात का संकेत भी करती है कि हमारे शहरों की समस्याओं का अंत साझे प्रयास से ही संभव है।

जिंदगी का पहिया

शहर में साइकिल रिक्शा ट्रॉली का योगदान और हकदारी

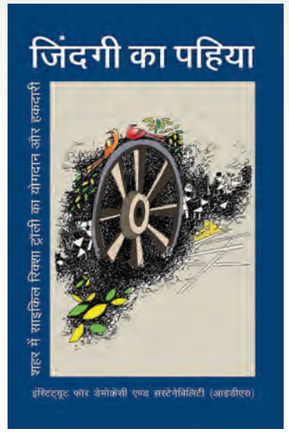

शहर हो या गांव – परिवहन-व्यवस्था में जितना यात्री वाहनों का महत्व है, उतना ही माल-वाहनों का। मगर यह कितना अजीब है कि परिवहन-व्यवस्था पर चर्चा-परिचर्चा में माल-वाहनों का जिक्र तक करना जरूरी नहीं समझा जाता। हमारे शहरों की जिंदगी तो और भी माल-परिवहन पर टिकी हुई है। जितना बड़ा शहर, वह उतना ही पर-निर्भर। सारा सामान कहीं और से आता है। बाहर से सामान आए या बाहर सामान जाए – दिल्ली जैसे महानगर में स्थानीय माल-परिवहन के संदर्भ में साइकिल रिक्शा ट्रॉली का योगदान बड़े महत्व का है।

जिंदगी का पहिया : शहर में साइकिल रिक्शा ट्रॉली का योगदान और हकदारी में दिल्ली के साइकिल रिक्शा ट्रॉली के विभिन्न पहलुओं को जांचा-परखा गया है – ऐतिहासिक, कानूनी, पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से। यह दिल्ली में रिक्शा ट्रॉली चालकों की जिंदगी को संपूर्णता में समझने-बूझने का अपनी तरह का पहला और गंभीर प्रयास है। कुमार प्रशांत के शब्दों में, "इस किताब का फलक बहुत व्यापक है और यह कितनी ही जगहों के, कितनी ही पृष्ठभूमियों से आए ट्रॉली रिक्शा चालकों की जिंदगी को टटोलती है। मुझे हैरानी हुई यह देखकर कि ये सभी रोज कुआं खोद के पानी पीने वाले लोग हैं, लेकिन इनमें निराशा नहीं है। परेशानी भी है, चिंता भी है; लेकिन एक अपूर्व किस्म का संतोष भी है जो जीने का मंत्र देता है।"

यह पुस्तक एक गंभीर अध्ययन का परिणाम है। इस अध्ययन के दरम्यान करीब 2000 रिक्शा ट्रॉली चालकों के बीच सर्वे किया गया, लगभग 50 रिक्शा ट्रॉली चालकों से मिलकर उनकी जिंदगी की कथा-व्यथा सुनी गई और कई सारे ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं व परिवहन-विशेषज्ञों की राय ली गई। इस अध्ययन को पूर्ण बनाने के लिए परिवहन से जुड़े बहुत सारे ग्रंथों के बीच से भी गुजरा गया। आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह पुस्तक भारतीय शहरों के संदर्भ में रिक्शा ट्रॉली पर केंद्रित एकमात्र पुस्तक है।

इस पुस्तक के शीर्षकों पर नजर डालिए, सहज ही इसकी विषय-वस्तु का अंदाजा लग जाएगा – 1. माल-परिवहन का प्राचीन युग, 2. माल-परिवहन का आर्वाचीन-युग, 3. दिल्ली में रिक्शा ट्रॉली : सड़क, नियम-कायदे और संघर्ष, 4. दिल्ली के बाजार और साइकिल रिक्शा ट्रॉली, 5. दिल्ली के औद्योगिक क्षेत्र और रिक्शा ट्रॉली, 6. दिल्ली के आवासीय इलाके और रिक्शा ट्रॉली, 7. दिल्ली में साइकिल रिक्शा ट्रॉली : तथ्य और आंकड़े, 8. आधुनिक शहरों की चुनौतियां और रिक्शा ट्रॉली, 9. रिक्शा ट्रॉली : वर्तमान और भविष्य।

यह पुस्तक भले ही दिल्ली की रिक्शा ट्रॉली पर केंद्रित है, लेकिन भारत के अन्य नगरों की रिक्शा ट्रॉलियों का दुख-दर्द भी इसमें समाया हुआ है। इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्व यह है कि इसके प्रकाशन से माल-परिवहन के बारे में शोध और अध्ययन के दरवाजे खुलेंगे जिनसे नगर में गैर-मोटर वाहनों के योगदान की स्वीकृति और सम्मान में इजाफा होगा।

साइकिल रिक्शे का साम्राज्य

राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र में साइकिल रिक्शे का अस्तित्व और संघर्ष

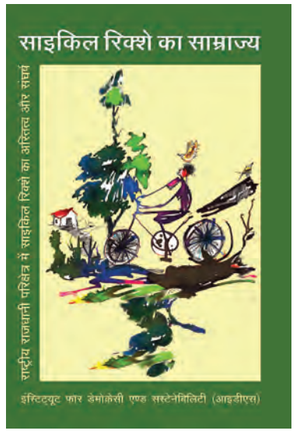

साइकिल रिक्शा एक तिपहिया गैर-मोटर वाहन है – सार्वजनिक यात्री-परिवहन का एक अंग। यह नगर-निवासियों और परदेसियों को आवागमन की सुविधा प्रदान करता है। यह मानव-शक्ति से यानि उसके हाथ-पैर की ताकत से चलने के कारण न तो ईंधन की खपत करता है और न ही प्रदूषण फैलाता है। यह गरीब आदमी के लिए रोजी-रोजगार भी मुहैया कराता है – कई स्तरों पर। कुछ लोग रिक्शा चलाकर अपनी आजीविका अर्जित करते हैं तो कुछ लोग रिक्शा मिस्त्री और रिक्शा मालिक बनकर। रिक्शा उत्पादकों का भी एक समुदाय है। रिक्शा मालिक हों या रिक्शा उत्पादक – कम पूंजी से अपना व्यवसाय अपनी हैसियत के अनुसार चलाते हैं।

साइकिल रिक्शे का साम्राज्य : राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र में साइकिल रिक्शे का अस्तित्व और संघर्ष पुस्तक दिल्ली सहित इसके आस-पास के छोटे-बड़े कुल 24 शहरों के रिक्शा चालकों, मालिकों, मिस्त्रियों, उत्पादकों और रिक्शा यूनियनों के अलावा रिक्शा सवारियों और रिक्शा तकनीक के अध्ययन पर आधारित है। दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा और राजस्थान के ये सभी शहर राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र का अंग हैं जिनकी अपनी-अपनी विशेषताएं हैं – साइकिल रिक्शे की परिचालन की दृष्टि से अलग-अलग नगरों में अलग-अलग नियम-कायदे हैं। इन नगरों की आबादी और क्षेत्रफल में विविधता है, इसलिए रिक्शा से जुड़े वहां के तमाम तबकों – चालक, मालिक, मिस्त्री, उत्पादक के जीवन में भिन्नता है। ये देश के विभिन्न भागों से आकर नगर में रिक्शा व्यवसाय से जुड़े हैं, जाति और धर्म की भिन्नता के कारण भी इनमें अनेक तरह की असमानताएं हैं। यह पुस्तक इन तबकों के बारे में तथा इन तबकों के विभिन्न व्यक्तियों के बारे में रोचक तथ्यों से भरी हुई है। इसमें इनके सुख-दुख, हर्ष-विषाद, आशा-आकांक्षा, हताशा-निराशा, खान-पान, अनुभूति और विचार की छवियां हैं। इसमें इनके इतिहास, वर्तमान और भविष्य की झलक है। साथ ही इनके निजी और सामूहिक संघर्षों का अतीत एवं वर्तमान है। इस पुस्तक में परिवहन के बारे में रिक्शा व्यवसाय से जुड़े लोगों और समाज के लोगों द्वारा की गई टिप्पणियां हैं। इसमें रिक्शा सवारियों के विचार भी लिपिबद्ध हैं।

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों और आंकड़ों का विश्लेषण तो है ही इस किताब में। यहां साइकिल रिक्शा एवं इससे जुड़े समुदायों की खास-खास विशेषताओं को रेखांकित करते हुए कुछ खास सुझाव भी दिए गए हैं। इन अनुशंसाओं पर अमल करके कोई भी नगर अपनी वर्तमान दशा में गुणात्मक बदलाव ला सकता है। साइकिल रिक्शे में हमारे शहर, देश और दुनिया की कई-कई समस्याओं के समाधान छिपे हैं। इस पुस्तक का पाठक साइकिल रिक्शे की एक वास्तविक दुनिया से साक्षात्कार करता है। यह पुस्तक संपूर्ण दक्षिण एशिया में अपनी तरह की एक खास पुस्तक है, जिसमें विभिन्न शहरों के रिक्शा समुदाय के विभिन्न तबकों की जीवंत तस्वीर है।

साइकिल गाथा

शहर में साइकिल की दशा और दिशा

साइकिल आम आदमी की सवारी है – अपनी खास विशेषताओं के कारण। यह सस्ता वाहन है – खरीद-मूल्य और रखरखाव-खर्च दोनों ही दृष्टि से। इसके चालक को इसके परिचालन के लिए ईंधन की चिंता नहीं करनी पड़ती। यह पक्के और चौड़े पथ की मुहताज नहीं है। यह अपने चालक के समय और पैसे की बचत करती है, उसे स्वस्थ रखने में मददगार है, सड़क-जाम से निकलने में भी सहायक है। पार्किंग के लिए भी उसे अधिक जगह की आवश्यकता नहीं होती। यह अपनी खासियतों के कारण दिल्ली के कामगारों के बीच उसी तरह लोकप्रिय है जैसे दुनिया के अन्य गरीब-गुरबा लोगों के बीच। फेरीवाले, दूधवाले, सब्जीवाले, दफ्तरों के कर्मचारी, विद्यार्थी, शिक्षक, दुकानदार, डाकिये, अखबार वाले, घरेलू नौकर-नौकरानियां, माली, फैक्टरी वर्कर, मोची, नाई – कौन नहीं है इसका मुरीद!

साइकिल गाथा : शहर में साइकिल की दशा और दिशा पुस्तक दिल्ली में कामगारों के बीच साइकिल के उपयोग को जानने-समझने के लिए किए गए एक अध्ययन का नतीजा है। इसके लिए दो हजार व्यक्तियों का सर्वे किया गया, जिनमें विविध कामों में लगे एक हजार कामगार थे। इसके अलावा लगभग चालीस कामगारों की आम जिंदगी की कहानियां सुनी गईं जिनमें से कुछ इस पुस्तक के अध्याय 'हाशिए के लोग' के अंतर्गत दर्ज की गई हैं। इस पुस्तक में साइकिल के बारे में ढेर सारी जानकारियां हैं जो इसकी देश-दुनिया में लोकप्रियता के आधार और इसे लोकप्रिय बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों पर भरपूर प्रकाश डालती हैं। इन जानकारियों को इकट्ठा करने के लिए हमने हिंदी-अंग्रेजी के विभिन्न ग्रंथों और पत्र-पत्रिकाओं को भी खंगाला है। 'साइकिल का साम्राज्य', 'दिल्ली : जो एक शहर है,' 'वैश्विक शहर और टिकाऊ परिवहन,'